द्वितीय संस्करण

वनस्पति शब्दकोश

उपयोगी पौधों का हिन्दी–लैटिन–अंग्रेजी शब्दकोश

SCIENTIFIC PUBLISHERS

सुधांशु कुमार जैन
सुमिता श्रीवास्तव

ouLifr ’kCndks’k

¼mi;ksxh ik/kks dk fgUnh&ysfVu&vaxzsth 'kCndks'k½

f}rh; la’kksf/kr laLdj.k

Lks/kks’k dqekj tSu] पी.एच.डी.

Lkfeerk JhokLro] एम.एस.सी.

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

प्रकाशक

lkbfUVfQd ifCy'kl ¼bfM;k½

जोधपुर

5–ए, न्यू पाली रोड
पोस्ट बॉक्स नं. 91
जोधपुर – 342 001 भारत

दिल्ली

4806/24, अंसारी रोड़
दरियागंज,
नई दिल्ली – 110 002 भारत

© 2018, लेखकगण

iR;k[;ku – Limits of Liability and Disclaimer of Warranty

लेखक गण ने इस पुस्तक की शुद्धता के बारे में पूरा प्रयत्न एवं पूरी सावधानी रखी है, फिर भी लेखकगण इस पुस्तक के किसी तथ्य, भाग, विषय या अन्य कथ्य की प्रमाणिकता के बारे में कोई दावा नहीं करते हैं। लेखक गण इस पुस्तक के आधार पर की गई चिकित्सा के परिणाम का उत्तरदायी नहीं होगें । इस पुस्तक के आधार पर चिकित्सा करने से पूर्व आयुर्वेद के योग्य व अनुभवी विशेषज्ञ चिकित्सक का परामर्श अवश्य लेवें।

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना माइक्रो फिल्म, फोटोस्टेट या अन्य किसी भी प्रकार से प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

ISBN: 978-93-86652-19-5
eISBN: 978-93-87869-96-7

Visit the Scientific Publishers (India) website at
http://www.scientificpub.com

Printed in India

i:kDdFku

भारत की वनस्पति–सम्पदा, विविधता तथा उपयोगिता, दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विविधता का विषय अवश्य अधिकांशतः विशेषज्ञों तथा वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थियों का अध्ययन क्षेत्र है, किन्तु उपयोगिता का विषय जन–मानस को भी आकर्षित करता है।

एक प्रामाणिक आंकलन के अनुसार भारत में पाए जाने वाले पेड़–पौधों में से लगभग एक–तिहाई से अधिक, किसी न किसी रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। इनका उपयोग प्रमुख रूप से औषधि, भोज्य पदार्थ, मसाले, फल–सब्जी, रंग–सुगन्ध व प्रसाधन सामग्री की प्राप्ति, फर्नीचर तथा अन्य प्रकार के घरेलू सजावटी सामान व खिलौने आदि की लकड़ी तथा ईंधन हेतु किया जाता है। परिवेश की सुन्दरता हेतु, बाग–बगीचे, पार्क, मुख्य मार्गों के किनारे अथवा गमलों में लगाने के लिए, भारत में पाए जाने वाले अनेक प्रकार के शोभनीय पौधे उपयोग में लाए जाते हैं। भारत की सांस्कृतिक परम्परा में अनेक पौधों को पूज्य माना गया है, इनका उपयोग मांगलिक कार्यों तथा शोकाकुल परिस्थितियों, दोनों में आवश्यक समझा जाता है।

स्वाभाविक कुतूहलवश, आज का सामान्य नागरिक अपने आस–पास उगने वाले पेड़–पौधों के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। मुख्य रूप से उसकी जिज्ञासा होती है कि अमुक पौधे का क्या नाम है, जब उसे ज्ञात होता है कि प्रत्येक पौधे का एक वैज्ञानिक नाम भी है, जिसके द्वारा वह समस्त जगत में जाना जाता है, तो वह उसका अन्तर्राष्ट्रीय नाम भी जानना चाहता है। यह नाम लैटिन भाषा में दिया जाता है जिसका सही उच्चारण भी जानना आवश्यक है। वह उसकी विशेष उपयोगिता भी पूछ लेता है।

अंग्रेजी भाषा में इस विषय से सम्बन्धित प्रश्नों के समाधान हेतु प्रचुर साहित्य उपलब्ध हैं, किन्तु हिन्दी में इस प्रकार की विषयवस्तु कम ही प्राप्य है।

डॉ. सुधांशु कुमार जैन, पूर्व निदेशक, 'बोटैनिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' ने इस अभाव को समझते हुए, यह वनस्पति शब्द कोश उपलब्ध कराया है। निश्चय ही यह पुस्तक सामान्य जनों की इस प्रकार की क्षुधा पूर्ति हेतु सहायक सिद्ध होगी।

कोश की समस्त विषयवस्तु 'शब्दावली' के अन्तर्गत प्रस्तुत की गयी है। इसमें भारत में पाए जाने वाले प्रमुख रूप से उपयोगी लगभग 1500 पौधे सम्मिलित किये गए हैं। पौधों को देवनागरी लिपि के वर्णानुक्रम के अनुसार संयोजित किया गया है। प्रत्येक पौधे के साथ कहीं–कही उसके एक या एक से अधिक पर्यायवाची नाम दिए गए हैं। कहीं–कहीं उसका अंग्रेजी नाम भी दिया गया है। सूक्ष्म में उपयोगिता दर्शाई गई है। पौधे का वर्तमान में स्वीकृत लैटिन नाम देवनागरी लिपि व रोमन लिपि, दोनों में दिया गया है।

पुस्तक में उल्लिखित समस्त देवनागरी अथवा रोमन लिपि में आए नामों को क्रमशः परिशिष्ट–1 व परिशिष्ट–2 में वर्णानुक्रम के अनुसार सम्मिलित किया गया है। इनके द्वारा अनेक नामों में से कोई भी ज्ञात हो तो शब्दावली में उसे सरलता से खोजा जा सकता है।

पुस्तक का प्रथम संस्करण सन 2002 ई. में छपा था। कालान्तर में किन्हीं कारणवश कई लैटिन नाम अमान्य हो गए थे। नामों में परिवर्तन करते हुए आज के युग में जो नाम अस्वीकृत माने गए हैं उन्हें आवश्यकतानुसार बदल कर स्वीकृत नाम दिए गए हैं। उपयोगिता की दृष्टि से नई जानकारी के अनुसार कुछ अन्य पौधों को भी शब्दावली में समावेश किया गया है।

इस उपयोगी जानकारी को पुस्तक के रूप में उपलब्ध कराने के सराहनीय प्रयास के लिए लेखकगण बधाई के पात्र हैं।

';keyky diij

पूर्व विभागाध्यक्ष,
हरबेरियम तथा एन्ज्यास्पर्म टैक्सोनोमी,
नेशनल बोटेनिक्ल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लखनऊ

f}rh; laLdj.k dh iLrkouk

ouLifr 'kCndk'k का प्रथम संस्करण 2002 में प्रकाशित हुआ था। अनेक पत्रो तथा संदेशो के आधार पर हमे प्रसन्नता है कि पुस्तक को न केवल वनस्पति शास्त्र के विद्यार्थियों एवम् शिक्षकों ने सराहा वरन सामान्य जनमानस ने भी इसका स्वागत किया। समाचार पत्रों तथा मासिक एवं अन्य पत्रिकाओं में विशेष कर अग्रेंजी में छपे लेखों में प्रायः ही पौधों के अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक नाम मिलते हैं। पिछले कुछ समय से भारत के शिक्षित वर्ग में भी अपने दैनिक उपयोग में आने वाले पौधों के वैज्ञानिक नामों को जानने की उत्सुकता बढ़ी है, इस पुस्तक ने इस जिज्ञासा की पूर्ति की है। वैज्ञानिक नामों के सही उच्चारण तथा उनके देवनागिरी में लिप्यांतरण के विषय में प्रथम संस्करण की प्रस्तावना में विस्तारपूर्वक दिया है।

पौधों के वैज्ञानिक नामों में कभी–कभी अन्तर्राष्ट्रीय वनस्पति नामकरण संहिता के नियमों के पालन के कारण परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है, अतः 2002 के संस्करण में दिये हुये अनेक नामों में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया, साथ ही पिछले पंद्रह वर्षों में कुछ अन्य पौधे भी सामान्य उपयोगिता तथा उनकी चर्चा के कारण उनको भी पुस्तक में सम्मिलित करना उपयोगी समझा गया।

dk'k i;kx dju ij dN lq>ko

1. भारत के किसी उपयोगी पौधे के देशी नाम से उसका सही लैटिन नाम, उच्चारण तथा अंग्रेजी नाम जानने हेतु कोश की मुख्य शब्दावली में देखें।
2. इस शब्दावली में नाम न मिलने पर परिशिष्ट सूची न॰ 1 में देशी नाम देखें : यहां इच्छित पौधे का कोश में स्थान मिल जाएगा।

3. परिशिष्ट सूची न॰ 2 से यह ज्ञात हो जाएगा कि, कोई लैटिन नाम अब स्वीकृत है अथवा नहीं, सही नाम मोटी छपाई में है, अस्वीकृत नाम सामान्य छपाई में है।

इस संस्करण के लिये *Mk- ';keyky th dij* ने प्राक्कथन लिखने का कष्ट किया, हम उनके आभारी हैं।

& y[kdx.k

iFke lLdj.k dh iLrkouk

1- Hkkjr d fdlh mi;kxh ik/k d n'kh uke l mldk lgh yfVu uke] mPpkj.k rFkk vxth uke tkuu gr dk'k dh e[; 'kCnkoyh e n[kA

2- bl 'kCnkoyh e uke u feyu ij ifjf'k"V lph uñ 1 e n'kh uke n[k ;gk bfPNr ik/k dk dk'k e LFkku fey tk;xkA

3- ifjf'k"V lph uñ 2 l ;g Kkr gk tk,xk fd] dkbZ yfVu uke vc Lohd'r g vFkok ugh] lgh uke ekVh Nikb e g] vLohd'r uke lkekU; Nikb e gA

मानव जाति की उत्पत्ति के पूर्व इस धरती पर घने वन और लाखों प्रकार की वनस्पतियाँ थी। मनुष्य का अपनी उत्पत्ति के समय से ही वनों, वृक्षों तथा अन्य वनस्पतियों से घनिष्ट संबंध रहा है। आज भी हम अपने भोजन, औषधि, इमारती लकड़ी, ईंधन, चारा, खाद्य तेल, मसाले, रेशे, गोंद एवं कागज़ आदि अनेकानेक वस्तुओं के लिये वनस्पतियों पर ही निर्भर करते हैं।

ik/kk d LFkkuh; vFkok n'kh uke

मनुष्य जिन वस्तुओं का प्रयोग करता है, जिनकी चर्चा करता है, जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता उसे होती है, उनको कोई नाम दे देता है। इस प्रकार भिन्न–भिन्न भाषाओं, क्षेत्रों, तथा देशों में पौधों के नामकरण का क्रम लगभग निरंतर चलता है। अतः जो पौधे एवं अन्य जीव–जंतु अनेक देशों और क्षेत्रों में पाये जाते हैं, उनके अनेक नाम हो जाते हैं, जैसे भारत में ही वट (बरगद), अमरुद (पीरु), अरहर (तूर/थूर), अरवी (कचालू, घुइयाँ), बबूल (कीकर), घीकुंआर (ग्वारपाठा, धृतकुमारी), रसौत (किलमारा, दारु हल्दी), रतन जोत (सदाबहार, बारहमासी, सदासुहागन), आदि।

कुछ स्थानीय नाम पौधों के रूप, आकार, गुण, उत्पत्ति स्थान पर आधारित होते हैं, जैसे छोटा गोखरु, बिच्छू बूटी, लाजवंती, मरोड़फली, शिवलिंगी, आकाशवेल, पाताल गरुड़, मोर पंखी, आदि। इनमें से कुछ रुप

अथवा निहित गुणों का संकेत देते हैं, तो अनेक भ्रामक भी होते हैं, जैसे जल नीम, व आकाश–नीम। प्रायः ही पौधों का सही वैज्ञानिक नाम ढूंढने में कठिनाई आती है।

प्राचीन साहित्य में अनेक पौधों के नाम के साथ, उनके गुण दोष तथा कभी–कभी आकार व रुप का वर्णन तो मिलता है, किंतु एक ही पौधे के कई नाम होने से, तथा प्रायः ही पौधों के चित्रों के अभाव में सही पहचान करना कठिन, अथवा कभी–कभी असंभव होता है। यही कारण है कि आज भी lkek और lithouh तथा अन्य कई महत्वपूर्ण वनस्पतियों की पहचान अनिश्चित है और विवाद का विषय है।

वनस्पति की सहस्रों जातियां अनेक देशों में और भूमंडल के बड़े क्षेत्रों में उगती हैं। सैकड़ों भाषाओं में उनके अलग–अलग नाम है; जो दूसरे देशों में लगभग अर्थहीन है। मात्र अनुमान के आधार पर उनकी पहचान करने के प्रयास से साहित्य में त्रुटियां भी आ जाती है।

vrjk"Vh; Lrj ij ik/kk d ekU; uke] vFkkr oKkfud uke

पौधों के विषय में उपयोगी खोज आदि पर कुछ कहने लिखने हेतु, पौधे की प्रत्येक जाति का अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्य केवल एक नाम होना अनिवार्य था। इसलिये पौधों के नामकरण की एक प्रणाली बनाली गई है, इसके अनुसार पौधों की प्रत्येक जाति का एक नाम होता है, जिसके दो भाग होते हैं, एक वंश (genus) का नाम, तथा दूसरा जाति (species) का नाम। इनका रूप लैटिन होता है, और लिपि रोमन (Roman)। वंश का नाम बड़े अक्षर (Capital) से, तथा जाति का छोटे (small) अक्षर से आरंभ होता है। प्रथम सही नाम देने वाले वैज्ञानिक का नाम (पूरा या संक्षिप्त में) लिखा जाता है (जैसे आम के लिए *Mangifera india* Linn., मसूर का *Lens culinaris* Medik)।

पौधों के नामकरण की अंतर्राष्ट्रीय संहिता में अनेक नियम, सिद्धान्त, सुझाव और दृष्टांत है, किंतु इसके तीन प्रमुख सिद्धान्त है –

1. पौधे की एक जाति (चाहे वह संसार में कही भी उग रही हो) केवल एक ही सही और स्वीकृत नाम होगा, एक से अधिक नहीं।

2. कोई अमुख नाम पौधे की केवल एक ही जाति को दिया जा सकेगा। अन्य कोई जाति, उस नाम से सम्बद्ध नहीं होगी।

3. पौधे को यदि कई नाम दिये गये है तो वह नाम, जो उसे सर्वप्रथम दिया गया था, तथा संहिता के अनुसार सही भी होगा, उसके लिये मान्य होगा।

अंग्रेजी भाषा जानने वालों को अथवा अंग्रेजी में लिखने वालों को प्रायः अपनी रचनाओं में पौधों के सही लैटिन नाम लिखने हेतु वांछित साहित्य अंग्रेजी में मिल जाता है। किन्तु हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लिखने वालों को इसमें कठिनाई होती है।

भारत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता, अनेक विद्यालयों में हिन्दी में शिक्षण, तथा वनस्पतिशास्त्र अथवा उपयोगी पौधों पर अनेक पुस्तकों और पत्रिकाओं के हिन्दी में प्रकाशन के कारण उनमें पौधों के सही वैज्ञानिक नामों का प्रयोग आवश्यक है।

आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा तथा वनस्पतिशास्त्र एवं वानिकी आदि पौधों से संबंधित सभी साहित्य में भी पौधों की सही पहचान तथा व्याख्या हेतु, विज्ञान में स्वीकृत नाम ही देना ठीक है।

पौधों के रोमन लिपि में लिखे वैज्ञानिक नामों का लिप्यांतरण भिन्न लिपियों में किया जा सकता है।

भारत में लेखकों की रचनाओं में पौधों के लैटिन नामों में वांछित शुद्धता, तथा उच्चारण में यथासंभव एकरूपता लाने के आशय से लगभग 1000 पौधों के नाम पर एक वनस्पति कोश (जैन 1967) पहले प्रकाशित हुआ था, वह बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।

पिछले 35 वर्षों में अनेक पौधों के नाम बदल गये। अनेक नये पौधे अधिक उपयोग में आने लगे। अतः इस नये कोश में अनेक नयी सूचना के साथ, तथा नये रूप में लगभग 1400 किस्मों के पौधों के नाम दिये हैं। इस बार कुछ चुने हुए प्रचलित अंग्रेजी नाम भी दिये गये हैं।

ysfVu ukek dk mPpkj.k vkj fyI;krj.k

पिछली शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण, अंग्रेजी के अक्षरों और शब्दों के प्रचलित उच्चारण का प्रभाव भारत में पौधों के वैज्ञानिक नामों के उच्चारण पर भी पड़ा, और अत्यंत अशुद्ध और भ्रामक उच्चारण व्यवहार में आ गया। अंग्रेजी में `a' का उच्चारण कहीं अ (away), कहीं आ (ask), और कहीं ए (ape) जैसा होता है। `e' का उच्चारण ई (me), तथा ए (get, ever) होता है। `u' का उच्चारण उ (put) तो है ही, अ (but, hut) भी है। पौधों के नामों में यह विरुपता कम होती है। पौधों के वैज्ञानिक नाम देवनागरी में लिखने, तथा सही उच्चारण में निम्न दृष्टान्त सहायक होंगे –

`a', अ अथवा आ की ध्वनि देगा, ए की नहीं – *Amaranthus* : अमारांथुस

`e', ए की ध्वनि देगा – *Beta* : बेटा, *Nepeta* : नेपेटा

`eu' एउ की ध्वनि देगा – *Euryale* : एउरिआले, *Eugenia* एउगेनिया

`i' के उपरांत दो व्यंजन हो तो ई, जैसे *pinnata* : पीन्नाटा

`i' के उपरांत एक व्यंजन या स्वर हो तो इ (अथवा ई) – *indica* इंडिका, *Gymnosporia* : गीम्नोस्पोरिआ

`o' सदैव ऑ अथवा ओ की ध्वनि देगा, *Cyamopsis* : सिआमॉप्सिस, *tora* : टोरा

`u' उ अथवा ऊ की ध्वनि देगा, *fistula*: फिस्टुला, *Urari*: ऊरारिआ

`y' प्रायः इ अथवा ई, एवं य की ध्वनि देगा, *Zizyphus* जिजीफुस, *Yoania* : *योआनिआ*

इनमें कुछ अपवाद अवश्य होते हैं : व्यक्तियों, देशों और स्थानों जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञाओं पर आधारित नामों का उच्चारण प्रायः प्रचलित उच्चारण पर ही होता है। जैसे *Buchanan (बुकैनन)* पर आधरित *Buchanania बुकैनानिआ* कहलाता है, बुचानानिआ नहीं : *Bauhin (बॉहिन)* पर आधारित *Bauhinia, बॉहिनिआ* कहा जाता है, बाऊहीनिआ नहीं। *Wright (राइट)* नाम पर आधारित *Wrightia, राइटिआ* कहा जाता है, व्रीधटिआ नहीं।

हिन्दी में तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पौधों के प्रचलित नाम भी पर्यायवाची, अथवा समानार्थी के रूप में सम्मिलित करने हेतु, हमने उपयोगी पौधों पर अंग्रेजी भाषा में छपी कुछ पुस्तकों से भी अनके हिन्दी नाम लिये है, रोमन में छपने नामों के देवनागरी लिप्यांतरण में भी कुछ कठिनाई आती है। जैसे –

A	:	अ, अथवा आ	**R**	:	र, ड़
C	:	च, स	**T**	:	ट, त
Ch	:	क, च, छ	**Th**	:	ठ, थ
D	:	ड, ड़, द	**U**	:	अ, उ, ऊ
Dh	:	द, ध	**I**	:	इ, ई

ऐसी स्थिति में, सभी संभावित नामों में से जो हिन्दी भाषा तथा पौधों के प्रचलित वर्ण विन्यास से अधिक संगत लगा, वहीं अपनाया गया। वांछित नाम ढूंढते समय पाठक संभावित मिलते जुलते शब्दों में भी ढूंढ ले।

ukek e ifjorlu

कभी–कभी कुछ कारणों से पौधों के वैज्ञानिक अर्थात् लैटिन नाम अशुद्ध दे दिये जाते हैं, और उन्हें अस्वीकार करके बदलना पड़ता है, जैसे–

1. वैज्ञानिक नयी खोजी हुई जाति को (भूल से) ऐसा नाम दे देता है, जो उस ही वंश की एक जाति को पहले दिया जा चुका था। एक वंश के पौधों की दो जातियों का एक ही नाम नहीं हो सकता। बाद में दिया हुआ नाम बदलना पड़ता है।
2. कभी–कभी विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है कि कोई नयी जाति का पौधा, नया तो अवश्य है, किन्तु उसे गलत वंश में रखा गया है, उसकी सही वंश में ले जाया जाता है। इस स्थिति में उसका जाति (species) नाम तो वही रहता है, वंश (genus) का नाम बदलना पड़ता है।
3. कभी–कभी वैज्ञानिक किसी पौधे को नयी जाति समझ कर नया नाम दे देता है और यह नाम वर्षों तक चलता रहता है। बाद में उस वंश के विस्तृत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, अरे यह पौधा तो वहीं है, जिसे उसी वंश में कुछ वर्ष पूर्व विधिवत नाम दिया जा चुका था; यह पौधा नया नहीं हैं। अतः किसी क्षेत्र में कई वर्ष तक प्रयोग में आने के बाद भी इस बाद के नाम को अस्वीकृत मान कर, पहले से स्थापित और ज्ञात नाम अपनाना पड़ता है।

ऐसी कई और परिस्थितियां है, जो नाम बदलने को बाध्य करती है, और कई वर्षों या दशकों तक प्रचलन में आने के बाद भी गलत नाम को त्याग कर, सही नाम प्रयोग करना होता है।

वैज्ञानिक साहित्य में सही और स्वीकृत नाम ही प्रयोग करना अपेक्षित है। क्योंकि अनेक व्यक्ति गलत नाम से अभ्यस्त हो जाते हैं; उन्हें भी पौधों की जानकारी तक पहुंचाने हेतु, शोधपत्रों और प्रपत्रों में सही नामों के साथ कुछ अधिक प्रचलित अस्वीकृत (पर्याय, synonym) नाम भी दे दिये जाते हैं।

अतः इस कोश में भी जहां उपयोगी समझा गया कुछ पुराने पर्याय भी सही नाम के बाद कोष्ठक में दे दिये गये हैं। पुस्तक के अंत में लैटिन नामों की अनुक्रमणिका में सही और अस्वीकृत दोनों प्रकार के नाम ले लिये गये हैं। जिससे पुराने नामों से परिचित पाठक भी, हिन्दी नामों आदि तक पहुंच सकें।

जहां एक वंश की भिन्न जातियों के नाम एक साथ आते हैं, तो वंश नाम का प्रथम अक्षर देने की प्रथा है। जैसे *Adhatoda vasica, A. zeylanica* तथा *Lagenaria vulgaris, L. leucantha*।

इस कोश में अभी तक ज्ञात सही नाम ही अपनाये गये हैं।

dk'k i;kx dju ij dN ldr

भारत में कुछ पौधों को हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी में कई–कई नाम दिये गये हैं; कोश में उनमें से सबसे अधिक परिचित या प्रचलित नाम मोटी छपाई में वर्णक्रम से दिये गये हैं, और बाद इसके कुछ और चुने हुए पर्याय या पर्यायवाची नाम भी दिये है, ये सामान्य छपाई में हैं। सब नाम देना न संभव है, न आवश्यक। यदि पाठक कोई नाम मूल शब्दावली में नहीं पाते हैं तो ifjf'k"B lph uh 1 में देखें, जहां हिन्दी के सब समानार्थी/पर्याय नाम वर्णक्रम से दिये है, वहां उस नाम का संदर्भ है जिसके अंतगर्त मूल शब्दावली में पौधें का ब्यौरा है। समानार्थी नामों का एक लाभ यह भी है, कि जहां एक नाम कई पौधों को दे दिया गया है, जैसे कुटकी, काकड़ा–सिंगी, वहां समानार्थी नामों की सहायता से वांछित पौधे का लैटिन नाम मिल जायेगा।

बहुत से पौधों के नाम एक शब्द विशेष के साथ कुछ विशेषण जोड़ कर बना लिये है, जैसे : काली मूसली, सफेद मूसली, तथा बंद गोभी, गांठ गोभी, फूल गोभी। ये प्रायः मूलशब्द के क्रम से दिये है, विशेषण बाद में दिये हैं। जैसे मूसली काली, मूसली सफेद। पाठक नाम मूल शब्द के अंतगर्त न पाये तो विशेषण से भी देख लें।

बहुत से नामों का अपभ्रंश हो गया है, जैसे अश्वगंधा से असगंध, अशगंधा आदि। कोश में प्रायः वे हिज्जे दिये है जो वनौषधि चंद्रोदय (1959) अथवा हिन्दी कोशो ने अपनाये हैं।

पौधों के प्रमुख उपयोगों का संक्षिप्त में संकेत है, संकेताक्षरों की सूची नीचे दी गई है।

अगली पंक्ति में सही लैटिन नाम देवनागरी लिपि में दिया है। तदुपरांत सही लैटिन नाम रोमन (अंग्रेजी) लिपि में तथा तिरछी मोटी छपाई में दिया है। वंश एवं जाति (कुछ पौधों की प्रजाति, उपजाति आदि भी दी है) की मोटी छपाई के बाद सामान्य छपाई में उन वैज्ञानिकों के नाम है, जिन्होंने वह सही नाम दिया है। उसके बाद गुरु कोष्ठक में सामान्य रोमन छपाई में पौधों के कुछ अस्वीकृत नाम दिये है। तदुपरांत पौधे के कुछ अंग्रेजी नाम, यदि उपलब्ध है तो रोमन लिपि में बड़े अक्षरों में दिये हैं।

ifjf'k"B lwph uaü 2 में सभी स्वीकृत तथा अस्वीकृत लैटिन नाम एवं अंग्रेजी नाम वर्णक्रम के अनुसार दिये है, और पौधे का हिन्दी नाम दिया है, जिसके अंतगर्त कोश में पौधे का ब्यौरा मिलेगा।

lf{kIr 'kCnksa dh lwph

उ॰ उद्यान	औ॰ औषधि	प्र॰ प्रजाति (variety)	ल॰ लकड़ी
उप॰ उपजाति	खा॰ खाद्य पदार्थ	भा॰ भाजी	वि॰ विविध
(subspecies)	चा॰ चारा	म॰ मसाला	सु॰ सुगंध

vkHkkj

इस पुस्तक के बनाने में उपयोगी परामर्श एवं सहायता के लिये सुश्री सत्या जैन एवं भूपिन्दर अहूजा धन्यवाद के पात्र है।

y[kdx.k

fo"k; lwph

प्राक्कथन iii

द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना v

प्रथम संस्करण की प्रस्तावना vii

1. शब्दावली 1

2. परिशिष्ट 1 117

3. परिशिष्ट 2 140

संदर्भ सूची 200